

13.12.2014



भाग्य विधाता बाप के साथ आत्मा की रूहरूहान

पहली स्मृति

मैं आत्मा हूँ | मैं इस धरा को प्रकाशमय करने के लिए स्वीट लाइट के होम से अवतरित हुई हूँ |

मैं कौन हूँ ?

मैं एक सफलतामूर्त आत्मा हूँ क्योंकि मैं परमात्मा का आज्ञाकारी बच्चा हूँ। अमृतवेले में बैठते ही मुझे ऐसा अनुभव हो रहा है जैसे भाग्य विधाता बाप मेरे मस्तक पर सफलता का तिलक लगा रहे हैं | बाबा स्वयं आकर मुझ आत्मा को सफलता का तिलक दे रहे हैं |

मैं किसकी हूँ ?

आत्मा की बाबा से रूहरिहान

मीठे बाबा ! गुड मारनिंग ! मैं अलर्ट होकर आपकी याद में एकाग्रचित्त बैठी हूँ | मैं यह जानती हूँ कि थोड़ा सा भी आलस्य व झुटका मुझे पूरा भाग्य बनाने से वंचित कर देगा | मैं आत्मा की ज्योति को जगाकर आपका आवाहन कर रही हूँ | आप तो लक्ष्मी के रचियता हैं | भाग्य विधाता बाबा ! आप आकर मेरा भाग्य बनाइये |

बाबा की आत्मा से रूहरिहान

मीठे बच्चे! जागो! मेरे साथ बैठो ! अमृतवेला पर जितना तुम मुझे याद करते हो उससे कई हज़ार गुणा मैं तुम्हें याद करता हूँ | रोज़ बाबा चक्कर लगाकर तुम्हारी याद का रीटर्न देते हैं | इस समय अगर तुम सोये पड़े होगे तो तुम्हें बाबा से सम्पूर्ण प्राप्ति नहीं हो सकेगी | इसलिए बाबा से पूरी मदद पाने के लिए पुरुषार्थ करो| चेक करो | अलर्ट होकर बैठो | आज्ञाकारी बनो , ताकि सारे दिन के लिए तुम्हें शक्ति मिलती रहे |

बाबा से प्रेरणाएं

अपने मन को सर्व बातों से हटाकर बाबा में लगाएं ! बाबा है साइलेंस का सागर | इस साइलेंस में , मैं बाबा से प्रेरणायुक्त व पवित्र सेवा के संकल्प ले रही हूँ |

बाबा से वरदान

सूक्ष्म वतन में मीठे बाबा के सामने मेरा फ़रिश्ता स्वरूप स्पष्ट दिखाई दे रहा है | बहुत प्यार व शक्तिशाली दृष्टि से बाबा मुझे वरदान दे रहे हैं –

बाबा तुम्हें रूहानी शक्तियां वरदान के रूप में दे रहे हैं | तुम इन दिव्य शक्तियों से सदा जगमगाते रहो | तुमने याद की शक्ति, जो सबसे आवश्यक

है, उस पर मास्टरी कर ली है | तुम अपने मन व बुद्धि को एक सेकंड में एकाग्र कर सकते हो |

बेहद की सूक्ष्म सेवा (आखिरी के पन्द्रह मिनट – प्रातः 4.45 से 5 बजे तक)

बाबा द्वारा प्राप्त हुए इस वरदान को मैं पुरे संसार को वरदाता बन कर अपने शुभ संकल्पों द्वारा दे रही हूँ | अपनी फ़रिश्ता ड्रेस पहनकर मैं विश्व भ्रमण करते हुए सर्व आत्माओं को ये वरदान दे रही हूँ |

रात्रि सोने के पहले

आवाज़ की दुनिया से पार जाकर अपनी स्टेज को स्थिर बनायें | चेक करें आज मैंने दिन भर में किसी बात की अवज्ञा तो नहीं की ? अगर हाँ, तो बाबा को बताएं | किसी के मोह व आकर्षण में बुद्धि तो नहीं फंसी ? अपने कर्मों का चार्ट बनाएं | तीस मिनट के योग द्वारा किसी भी गलत कर्म के प्रभाव से स्वयं को मुक्त करें | अपने दिल को साफ व हल्का कर सोयें |